स्वावलम्बन और अखंड भारत: आत्मनिर्भरता से एकता तक

- लेखक : दीपक द्विवेदी
- तारीख : October 17, 2025

जितना हो सके, अपने काम स्वयं करना और अपनी ज़रूरतों को अपने प्रयास से पूरा करना शरीर को सुख देता है, मन को प्रसन्न करता है और आत्मविश्वास बढ़ाता है। जो व्यक्ति अपने बल पर जीता है, वही वास्तव में सुखी होता है, क्योंकि उसे हर बात के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। यही स्वावलम्बन हमारी भारतीय संस्कृति की मूल भावना है।

भारत के लिए स्वावलम्बन का मतलब केवल पैसा कमाना या आर्थिक रूप से मजबूत होना नहीं है। इसका अर्थ है अपनी भाषा पर गर्व करना, अपनी संस्कृति को समझना और अपनी सोच में आत्मविश्वास रखना। जब कोई समाज अपनी पहचान के साथ खड़ा होता है, तभी वह दूसरों की नकल करने के बजाय अपना रास्ता खुद बनाता है। आज जब भारत बेरोज़गारी, सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक पहचान और पुरानी औपनिवेशिक सोच जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब स्वावलम्बन ही वह रास्ता है जो हमें आगे बढ़ने और एक मजबूत, आत्मविश्वासी भारत बनाने की दिशा दिखाता है।

आर्थिक स्वावलम्बन: राष्ट्र की रीढ़

भारत का आर्थिक ढाँचा सदियों से ग्राम और श्रम पर आधारित रहा है। आधुनिक समय में इसे कृषि, लघु उद्योग और सूक्ष्म उद्यमों से जोड़ना अनिवार्य है। महात्मा गांधी ने कहा था-"भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है।" यदि गाँव आत्मनिर्भर होंगे, तो भारत भी आत्मनिर्भर होगा।

गावों में निहित भारत

आज आवश्यकता है कि हम रोजगार को केवल नौकरी से न जोड़ें, बल्कि उद्यमिता को भी समान महत्व दें। कौशल विकास और तकनीक को स्थानीय उद्योगों से जोड़ने से न केवल बेरोजगारी का समाधान होगा, बल्कि आत्मगौरव भी बढ़ेगा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही कहा है-
"स्वावलंब की एक झलक पर, न्यौछावर कुबेर का कोष।"

संघ ने भी अपने प्रस्तावों में "भारतीय आर्थिक मॉडल की बात की है, जिसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था, श्रमप्रधान उद्योग, महिला भागीदारी और न्यायपूर्ण वितरण पर विशेष बल दिया गया है।

सांस्कृतिक, भाषाई और आध्यात्मिक स्वावलम्बन

आर्थिक प्रगति तब तक अधूरी है जब तक उसके साथ सांस्कृतिक आत्मबोध न हो। औपनिवेशिक शासन ने हमारी परंपराओं और जीवनशैली को हीन बताने का प्रयास किया, जबकि भारत की आत्मा अपने पर्व-त्यौहारों, लोककलाओं और संस्कारों में बसती है। भाषा इस आत्मगौरव की धुरी है। अंग्रेजी पर अति-निर्भरता ने हमें आत्मविश्वासहीन बनाया, जबकि मातृभाषा ही हमारे विचारों की जड़ है। शिक्षा, विज्ञान और प्रशासन में भारतीय भाषाओं का उपयोग हमें स्वावलम्बन की राह पर आगे बढ़ाएगा।

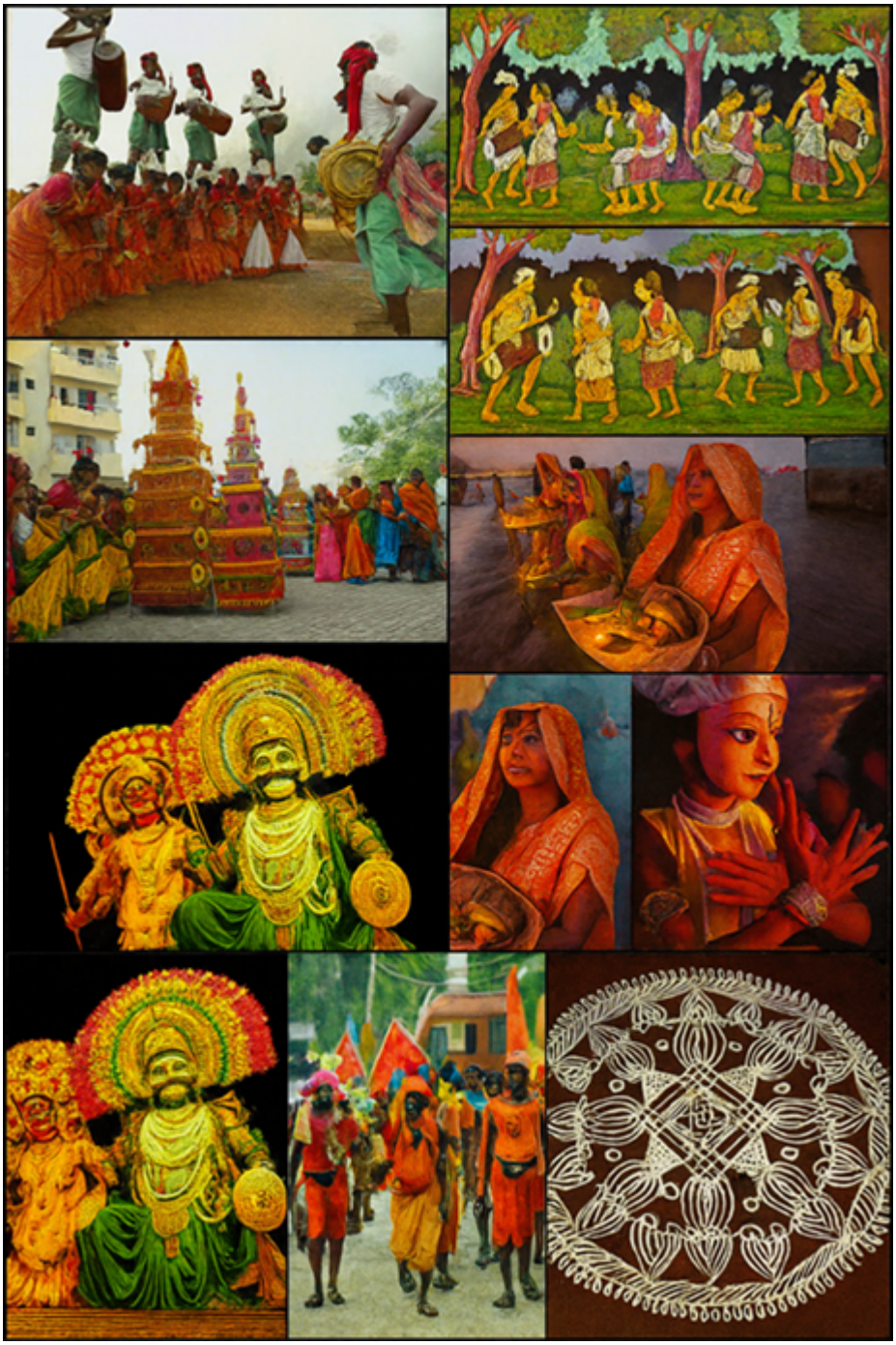

भारत के विविध लोकरंग और पर्व

स्वावलम्बन का उच्चतम आयाम आध्यात्मिकता है। यह हमें "सादा जीवन, उच्च विचार" का मार्ग दिखाता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था 'उठो, जागो और स्वयं के भीतर की शक्ति को पहचानो। कोई दूसरा तुम्हारी मदद नहीं कर सकता: तुम्हें स्वयं अपना उद्धार करना होगा।" यह संदेश स्पष्ट करता है कि वास्तविक स्वावलम्बन भीतर की शक्ति को पहचानकर अपने श्रम और विश्वास से खड़े होने में है।

भारत के महान संत- स्वामी विवेकानंद

विभाजनकारी नैरेटिव और उनका समाधान भारत को तोड़ने के लिए समय-समय पर आर्य-द्रविड़ विवाद, भाषा संघर्ष, मूलनिवासी विमर्श और औपनिवेशिक दृष्टि से लिखा गया इतिहास जैसे नैरेटिव गढ़े गए। इनका लक्ष्य हमारी सांस्कृतिक एकता और आत्मगौरव को कमजोर करना था। स्वावलम्बन इन सबका समाधान प्रस्तुत करता है। जब हम साझा संस्कृति और परंपराओं पर गर्व करेंगे, तो आर्य-द्रविड़ का विवाद अर्थहीन हो जाएगा।

मातृभाषाओं को समान सम्मान देकर भाषा संघर्ष अपने आप समाप्त होगा। इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से लिखने पर "विदेशी" और "मूलनिवासी" की बहस अप्रासंगिक हो जाएगी।और जब आर्थिक-सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता होगी, तो हर भारतीय अपनी पहचान "भारत" में पाएगा, न कि किसी संकीर्ण खांचे में। यही स्वावलम्बन अखंड भारत की आत्मा है जहाँ समाज आत्मविश्वास से भरा हो, परंपराएँ जीवंत हों और हर नागरिक अपनी भारतीय पहचान पर गर्व करे।

अखंड भारत और स्वावलम्बन का संबंध

अखंड भारत का अर्थ केवल भौगोलिक विस्तार नहीं है। यह चेतना और संस्कारों की एकता है-हिमालय से कन्याकुमारी और गुजरात से अरुणाचल तक एक स्वर में उठती आत्मगौरव की पुकार। स्वावलम्बन इस संकल्पना को मूर्त रूप देता है। जब हम आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर, सांस्कृतिक रूप से आत्मगौरवी, भाषाई रूप से आत्मविश्वासी और आध्यात्मिक रूप से आत्मचेतन होंगे, तभी अखंड भारत का स्वप्न वास्तविकता में बदल सकेगा।

स्वावलम्बन से ही अखंड भारत संभव है, और अखंड भारत से ही विश्व में शांति और समरसता। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा है कि स्वावलम्बन का अर्थ विदेशी व्यापार को पूरी तरह छोड़ना नहीं, बल्कि ऐसा व्यापार करना है जो हमारी शर्तों पर और हमारी स्वतंत्रता के साथ हो। यही संतुलन अखंड भारत की दिशा है, जहाँ "स्व" ही राष्ट्र की शक्ति का आधार बनता है।

भारत का स्वावलम्बन केवल भारत की विजय नहीं, बल्कि वसुधैव कुटुंबकम् की वैश्विक विजय है। स्वावलम्बन केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि जीवन का दर्शन है। इसमें स्वदेश, स्वसंस्कृति,स्वभाषा,स्वाभिमान, स्वधर्म, स्वज्ञान और स्वपरंपरा का समन्वय है। यही भारत को औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त कर अखंड भारत की संकल्पना को साकार करेगा।

भारत का स्वावलम्बन केवल भारत तक सीमित नहीं है। 'वसुधैव कुटुंबकम् की भावना बताती है कि आत्मनिर्भर भारत पूरी दुनिया को नई दिशा देगा। और जब भारत अपने स्वावलम्बन के बल पर खड़ा होगा, तब वह न केवल अपने भीतर अखंडता स्थापित करेगा, बल्कि वैश्विक शांति और विकास का मार्गदर्शक भी बनेगा।

"स्वावलम्बन से ही अखंड भारत संभव है, और अखंड भारत से ही विश्व में शांति और समरसता

लेख-
दीपक द्विवेदी
लेखक